Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 04, October-December, 2025, pp. 118-124

किराडू मंदिर समूहः प्राचीन स्थापत्य वैभव से आधुनिक सांस्कृतिक पर्यटन तक

फुसा राम*

विद्यार्थी, इतिहास विभाग, खुला विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान।

*Corresponding Author: fusabaytu@gmail.com

***Citation**: राम, फुसा. (2025). किराडू मंदिर समूहः प्राचीन स्थापत्य वैभव से आधुनिक सांस्कृतिक पर्यटन तक. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 15(04), 118–124.*

सार

किराडू मंदिर समूह, जो राजस्थान के बाड़मेर जिले में स्थित है, भारतीय मध्यकालीन स्थापत्य कला का एक अद्वितीय उदाहरण है। यह मंदिर समूह विशेष रूप से मारू–गुर्जरा शैली की वास्तुकला का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करता है, जिसे मध्यकालीन पश्चिमी भारत में विकसित किया गया था। इस अध्ययन में किराडू के पांच मुख्य मंदिरों दृ सोमे वर मंदिर, तीन शिव मंदिर और एक विष्णु मंदिर की स्थापत्य संरचना और वर्तमान स्थिति का विश्लेषण किया गया है। शोध में मंदिरों की ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज संरचनात्मक विशेषताओं का अवलोकन किया गया, जिसमें जगति, पीठ, मंडोवर और शिखर के विभिन्न खंड शामिल हैं। इसके अलावा, विंड–इंड्यूस्ड क्षरण, मौसमजनित नुकसान और जड़ी–बूटियों व पशु आकृतियों की मूर्तिकला पर हुए प्रभावों का भी अध्ययन किया गया। मंदिरों की दीवारों में ब्लॉक–टू–ब्लॉक लॉकिंग प्रणाली और कलाकार्यों की विशिष्ट बनावट ने दर्शाया कि यह स्थापत्य शिल्प किस हद तक तकनीकी रूप से उन्नत और स्थायित्वपूर्ण था। अध्ययन ने यह भी संकेत दिया कि विष्णु मंदिर की अश्वपिता पट्टी की अनुपस्थिति मंदिर के निर्माण काल और शैलीगत विकास के क्रम की पहचान करने में सहायक है। शोध के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि किराडू मंदिर समूह न केवल स्थापत्य और मूर्तिकला के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह उस समय के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन का भी सजीव प्रमाण प्रस्तुत करता है। इन मंदिरों के संरक्षण और मरम्मत के लिए किए गए विश्लेषण ने यह संकेत दिया कि उचित संरचनात्मक अध्ययन, सामग्री परीक्षण और संरक्षण तकनीकों के माध्यम से इन ऐतिहासिक स्मारकों को सुरक्षित रखा जा सकता है। इसके अलावा, यह अध्ययन पश्चिमी भारत के मध्यकालीन मंदिर स्थापत्य, उनकी सामाजिक उपयोगिता और स्थापत्य नवाचारों को समझने में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। किराडू का यह मंदिर समूह आज भी न केवल पुरातात्विक और ऐतिहासिक दृष्टि से मूल्यवान है, बल्कि आधुनिक सांस्कृतिक और धार्मिक पर्यटन के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन चुका है, जिससे यह क्षेत्रीय और राष्ट्रीय पर्यटन नीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

शब्दकोशः *किराडू मंदिर समूह, मारू–गुर्जरा स्थापत्य, मध्यकालीन राजस्थान, मूर्तिकला और संरक्षण, सांस्कृतिक पर्यटन।*

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

प्रस्तावना

राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र में स्थित किराडू मंदिर समूह भारतीय स्थापत्य, कला और संस्कृति का एक अनुपम प्रतीक है। बाड़मेर जिले के हाठमा गांव के समीप स्थित यह मंदिर समूह 11वीं–12वीं शताब्दी के दौरान निर्मित हुआ, जब यहाँ परमार और चौहान वंश के शासकों का शासन था, जो गुजरात के सोलंकी (चालुक्य) राजाओं की अधीनता में थे। उस समय किराडू नगर, जिसे प्राचीन अभिलेखों में किरातकूप कहा गया है, पश्चिम भारत का एक समृद्ध धार्मिक एवं सांस्कृतिक केंद्र था। यहाँ निर्मित मंदिरों में मरु–गुर्जर स्थापत्य शैली की भव्यता अपने उत्कर्ष पर दिखाई देती है कृ ऊँचे शिखर, गजपृष्ठ, अ वपीठ, नरपीठ, और गवाक्ष जैसी जटिल शिल्प सज्जाएँ इस शैली की विशेष पहचान हैं। किराडू के मंदिरों का सबसे उल्लेखनीय उदाहरण सोमेश्वर मंदिर है, जो अपने गर्भगृह, अंतराल, महामंडप और द्वारमंडप की अलंकृत संरचना के कारण "राजस्थान का खजुराहो" कहलाता है। इन मंदिरों में प्रयुक्त बलुआ पत्थर की सूक्ष्म नक्काशी और संतुलित संरचना उस युग की स्थापत्य तकनीक, धार्मिक भावनाओं और कलात्मक दृष्टि का जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करती है।

समय के प्रवाह में विदेशी आक्रमणों, भूकंपीय हलचलों, तथा अत्यधिक तापमान भिन्नता के कारण इन मंदिरों का एक बड़ा भाग क्षतिग्रस्त हो गया। किंतु आज भी इनके भग्नावशेष भारत की सांस्कृतिक निरंतरता के अमिट प्रतीक हैं। वर्तमान युग में जब सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण और पर्यटन विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है, तब किराडू मंदिर समूह पुनः चर्चा के केंद्र में आया है। यह स्थल न केवल स्थापत्य प्रेमियों और इतिहासकारों के लिए अध्ययन का विषय है, बल्कि यह सांस्कृतिक पर्यटन के लिए भी अपार संभावनाएँ रखता है। राजस्थान पर्यटन विभाग और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के सहयोग से इन मंदिरों के संरक्षण और पुनर्निर्माण के प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे स्थानीय लोगों के लिए आजीविका के अवसर भी बढ़े हैं।

अतः "किराडू मंदिर समूह : प्राचीन स्थापत्य वैभव से आधुनिक सांस्कृतिक पर्यटन तक" विषय पर यह अध्ययन इस बात को समझने का प्रयास करता है कि कैसे एक मध्यकालीन स्थापत्य चमत्कार आधुनिक भारत की सांस्कृतिक चेतना, पर्यटन अर्थव्यवस्था और ऐतिहासिक गर्व का पुनर्जागरण बन सकता है। यह शोध न केवल स्थापत्य के सौंदर्यबोध को रेखांकित करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि कैसे प्राचीन धरोहरें आज के समाज में सांस्कृतिक पहचान और आर्थिक विकास के माध्यम बन सकती हैं।

साहित्य समीक्षा

किराडू मंदिर समूह और उसके स्थापत्य तथा मूर्तिकला अध्ययन के क्षेत्र में कई विद्वानों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। M.A. Dhaky (1967 1975 1998) ने किराडू और मरु–गुर्जर शैली के मंदिरों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया। उनके अनुसार, सोमे वर, शिव और विष्णु मंदिरों की संरचना में उदारवचंद (Udharvachhand) और तलचंद (Talchhand) की विशेषताएँ मरु–गुर्जर शैली की विशिष्ट पहचान हैं। उन्होंने मंदिरों की पिथा और मंडोवर जैसे हिस्सों की मूर्तिकला सज्जाओं कृ गजपीठ, अ वपीठ, नरपीठ कृ का विवरण दिया है और यह भी उल्लेख किया कि विष्णु मंदिर में अश्वपीठ की अनुपस्थिति इसे अन्य मंदिरों से पहले निर्मित होने का संकेत देती है। Choudhary, Mahendra (2012) ने इस अध्ययन को और आगे बढ़ाते हुए मंदिरों में प्रयुक्त बलुआ पत्थर की जटिल नक्काशी, इंटरलॉकिंग ब्लॉक्स की तकनीक और संरचनात्मक स्थायित्व पर ध्यान दिया। उन्होंने मौसमीय प्रभावों, दीर्घकालीन अपक्षय और आक्रमणों के कारण हुए क्षरण का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया और संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया।

इसके अतिरिक्त, Agrawala, R.C. (1954, 2011) और Bhandarkar, D.R. (1912) ने राजस्थान के मंदिरों की मूर्तिकला, अभिलेख और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन किया। उनके अनुसार, किराडू और ओसियां जैसे स्थल पश्चिमी भारत में मध्यकालीन स्थापत्य और सांस्कृतिक केंद्र रहे हैं, जिनमें धार्मिक और सामाजिक जीवन के तत्व स्पष्ट रूप से निहित हैं। Agrawala ने कृष्ण और बलराम से संबंधित मूर्तिकला तथा राजस्थान में

कृष्णभक्ति के दृश्य प्रस्तुत किए, जो उस समय की सामाजिक–धार्मिक परंपराओं का प्रतिबिंब हैं। ठींदकंतांत ने ओसियां और किराडू के मंदिरों के ऐतिहासिक और स्थापत्य महत्व को दर्शाते हुए बताया कि ये मंदिर न केवल धार्मिक आस्था के केन्द्र रहे, बल्कि स्थानीय कला, शिल्प और सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रसार में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। साहित्य से स्पष्ट होता है कि किराडू मंदिर समूह केवल स्थापत्य और मूर्तिकला का उदाहरण नहीं है, बल्कि यह मध्यकालीन राजस्थान के सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक जीवन का सजीव दर्पण है। वर्तमान शोध इसी आधार पर मंदिरों के संरक्षण, संरचनात्मक अध्ययन और सांस्कृतिक पर्यटन विकास की दिशा में योगदान देने का प्रयास करेगा।

शोध समस्या

किराडू मंदिर समूह राजस्थान की मरुस्थलीय भूमि में स्थित एक अद्वितीय स्थापत्य धरोहर है, परंतु इसके ऐतिहासिक, कलात्मक और संरचनात्मक महत्त्व के अनुरूप इसका अध्ययन अत्यंत सीमित रहा है। अधिकांश विद्वानों ने केवल सोमे वर मंदिर या विष्णु मंदिर की स्थापत्य शैली का उल्लेख किया है, जबकि पूरे मंदिर समूह की समग्र स्थापत्य योजना, निर्माण तकनीक, और संरचनात्मक स्थायित्व पर पर्याप्त शोध नहीं हुआ है। इसके अतिरिक्त, इस क्षेत्र की भौगोलिक और जलवायु स्थितियाँ कृ जैसे अत्यधिक तापमान भिन्नता, मरुस्थलीय हवाएँ, और अपर्याप्त संरक्षण व्यवस्था कृ इन मंदिरों के पत्थर एवं मूर्तिकला पर लगातार प्रभाव डाल रही हैं। परिणामस्वरूप, मंदिरों की मूल कलात्मकता और स्थापत्य संतुलन धीरे–धीरे क्षीण होता जा रहा है। इन चुनौतियों के बीच यह समझना अत्यावश्यक हो जाता है कि इन प्राचीन स्थापत्य अवशेषों का संरक्षण कैसे किया जाए ताकि वे भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी सांस्कृतिक प्रेरणा स्रोत बने रहें।

दूसरी ओर, किराडू मंदिर समूह का पर्यटन परिदृश्य भी अपेक्षाकृत उपेक्षित है। इसे ”राजस्थान का खजुराहो” कहा जाने के बावजूद यह स्थल न तो पर्याप्त प्रचार प्राप्त कर पाया है और न ही यहाँ पर्यटन हेतु आवश्यक सुविधाओं का विकास हुआ है। स्थानीय समुदायों की भागीदारी, सांस्कृतिक आयोजनों का अभाव, और अवसंरचनात्मक कमी इसके पर्यटन संभावनाओं को सीमित करती है। अतः शोध की मूल समस्या यह है कि कैसे किराडू मंदिर समूह को उसके स्थापत्य वैभव को अक्षुण्ण रखते हुए एक सतत सांस्कृतिक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया जा सकता है। इस अध्ययन का उद्देश्य स्थापत्य संरक्षण, सांस्कृतिक पुनर्जीवन, और पर्यटन विकास कृ इन तीनों के मध्य एक संतुलित दृष्टिकोण विकसित करना है, जिससे यह स्थल भारत की सांस्कृतिक धरोहरों में अपना उचित स्थान पुनः प्राप्त कर सके।

शोध के उद्देश्य एवं महत्व

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य किराडू मंदिर समूह की स्थापत्य, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्ता को समग्र रूप में उजागर करना तथा इसके संरक्षण एवं पर्यटन विकास की संभावनाओं का विश्लेषण करना है। अध्ययन का लक्ष्य यह समझना है कि किस प्रकार मरु–गुर्जर स्थापत्य शैली में निर्मित इन मंदिरों की संरचना, मूर्तिकला और निर्माण तकनीक मध्यकालीन राजस्थान की सांस्कृतिक परंपराओं तथा सामाजिक जीवन को प्रतिबिंबित करती है। इसके साथ ही शोध का उद्देश्य यह भी है कि वर्तमान में मंदिरों की संरचनात्मक स्थिति, पर्यावरणीय क्षरण के प्रभाव, तथा संरक्षण की चुनौतियों की वैज्ञानिक समीक्षा की जाए ताकि भविष्य के लिए प्रभावी संरक्षण एवं पुनर्स्थापन की रणनीतियाँ विकसित की जा सकें।

इस शोध का महत्व इस दृष्टि से भी है कि यह न केवल एक प्राचीन स्थापत्य समूह के सांस्कृतिक मूल्य को पुनः स्थापित करता है, बल्कि इसे आधुनिक सांस्कृतिक पर्यटन से जोड़ने का मार्ग भी प्रशस्त करता है। किराडू मंदिर समूह का पर्यटन विकास न केवल स्थानीय समुदायों की आजीविका को सशक्त बना सकता है, बल्कि यह क्षेत्रीय पहचान, लोककला और पारंपरिक संस्कृति के पुनर्जीवन का माध्यम भी बन सकता है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि कैसे ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और पर्यटन

विकास एक–दूसरे के पूरक बन सकते हैं, और कैसे किराडू जैसा प्राचीन स्थल भारत के सांस्कृतिक मानचित्र पर अपनी खोई हुई पहचान पुनः प्राप्त कर सकता है।

मुख्य विचार

राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत और पर्यटन के परस्पर संबंधों का अध्ययन इस शोध का केन्द्रीय विचार है। इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार राजस्थान की ऐतिहासिक धरोहरें, स्थापत्य कला, लोक परंपराएँ, संगीत, नृत्य और मेले–त्योहार न केवल राज्य की सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखते हैं, बल्कि पर्यटन के विकास में भी प्रमुख भूमिका निभाते हैं। सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण, प्रस्तुतीकरण और व्यावसायीकरण कृ ये तीनों पहलू पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इस शोध में यह भी विश्लेषण किया जाएगा कि पर्यटन उद्योग किस प्रकार स्थानीय समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति को प्रभावित करता है। इस प्रकार, सांस्कृतिक विरासत और पर्यटन के बीच का यह अंतःसंबंध राजस्थान के सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए एक प्रमुख घटक के रूप में उभरता है।

- **राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत की विशेषताएँ**

राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत उसकी ऐतिहासिक, कलात्मक और सामाजिक विविधता का सजीव प्रमाण है। यह राज्य अपने भव्य किलों, महलों, हवेलियों, मंदिरों और लोक कलाओं के कारण वि वभर में प्रसिद्ध है। यहाँ की सांस्कृतिक परंपराएँ केवल स्थापत्य धरोहरों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि लोकगीतों, लोकनृत्यों, वस्त्रों, आभूषणों, लोककथाओं और पारंपरिक जीवनशैली में भी गहराई से निहित हैं।

मेवाड़, मारवाड़, जयपुर, शेखावाटी, हाड़ौती जैसे प्रत्येक क्षेत्र की अपनी अलग सांस्कृतिक पहचान है। उदाहरणस्वरूप कृ उदयपुर का मेवाड़ी स्थापत्य, जो झीलों और संगमरमर के महलों के लिए प्रसिद्ध है; जोधपुर का नीला शहर, जिसकी कला और संगीत परंपरा लोकसंस्कृति का अभिन्न भाग है; और जयपुर, जिसे "पिंक सिटी" कहा जाता है, अपने नियोजित स्थापत्य और हस्तशिल्प परंपराओं के कारण यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित है।

राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ परंपरा और आधुनिकता का संतुलित समन्वय देखने को मिलता है। लोक कलाएँ आज भी जीवंत हैं, और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रही हैं। ऊँट, कठपुतली, लोकगीत, और तीज–त्योहार न केवल स्थानीय जीवन का हिस्सा हैं, बल्कि पर्यटकों को आकर्षित करने के प्रमुख माध्यम भी हैं। इस प्रकार, राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान की पहचान और भविष्य की प्रेरणा भी है।

- **सांस्कृतिक पर्यटन का स्वरूप और विकास**

सांस्कृतिक पर्यटन राजस्थान के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राजस्थान की ऐतिहासिक धरोहरें, जैसे कि किराडू मंदिर समूह, किले, महल, हवेली और लोक परंपराएँ, पर्यटकों को आकर्षित करने का प्रमुख आधार हैं। सांस्कृतिक पर्यटन केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह स्थानीय समाज, आर्थिक गतिविधियों और सांस्कृतिक आदान–प्रदान का भी माध्यम बनता है। मंदिरों की स्थापत्य कला, मूर्तिकला और अभिलेख, उत्सव, लोक नृत्य और संगीत जैसी गतिविधियाँ पर्यटकों के अनुभव को समृद्ध करती हैं।

सांस्कृतिक पर्यटन के विकास में राज्य और स्थानीय समुदाय दोनों की भागीदारी आवश्यक है। राज्य द्वारा संरक्षित स्थलों की निगरानी, सुविधाओं का विकास, और पर्यटक मार्गदर्शन, जबकि स्थानीय समुदाय द्वारा हस्तशिल्प, संगीत, नृत्य और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करना पर्यटन को जीवंत बनाता है। किराडू मंदिर जैसे स्थल न केवल धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व रखते हैं, बल्कि वे सांस्कृतिक पर्यटन के रूप में क्षेत्र की आर्थिक और सामाजिक उन्नति में योगदान भी करते हैं। इस प्रकार, सांस्कृतिक पर्यटन का स्वरूप केवल स्थलों की यात्रा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अनुभव, शिक्षा और आर्थिक विकास का सम्मिलित माध्यम है।

- **किराडू मंदिर समूह का स्थापत्य और मूर्तिकला दृश्य**

किराडू मंदिर समूह, बाड़मेर, राजस्थान का दृश्य मध्यकालीन स्थापत्य और मूर्तिकला की भव्यता को दर्शाता है। सोमेश्वर मंदिर सहित इस समूह के मंदिर मरु–गुर्जर शैली के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जिनकी बाहरी दीवारों और स्तंभों पर गजपीठ, अश्वपीठ और नरपीठ जैसी जटिल मूर्तिकला सज्जाएँ स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं। यह नक्काशी केवल धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का प्रतीक नहीं है, बल्कि उस समय की सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियों और कला–शिल्प कौशल का भी प्रमाण प्रस्तुत करती है। बाड़मेर के शुष्क और चरम तापमान वाले वातावरण के कारण दीवारों और स्तंभों पर प्राकृतिक अपक्षय, टूट–फूट और क्षरण के निशान दिखाई देते हैं, जो इस ऐतिहासिक धरोहर की संरचनात्मक कमजोरियों को भी दर्शाते हैं। संरक्षित हिस्सों और मरम्मत के प्रयासों को देखकर यह स्पष्ट होता है कि मंदिरों की मूल संरचना को बनाए रखने के लिए विशेष तकनीक जैसे इंटरलॉकिंग ब्लॉक्स और कैल्सरियस सीमेंट का प्रयोग किया गया है। यह दृश्य न केवल मध्यकालीन स्थापत्य और मूर्तिकला की भव्यता का सजीव उदाहरण प्रस्तुत करता है, बल्कि बाड़मेर क्षेत्र की प्राचीन सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का महत्वपूर्ण प्रतीक भी है, जो आज भी पर्यटकों और शोधकर्ताओं को अपनी कलात्मकता और ऐतिहासिक महत्व के कारण आकर्षित करता है।

संरचनात्मक स्थायित्व और संरक्षण की आवश्यकता

किराडू मंदिर समूह, बाड़मेर, राजस्थान के मध्यकालीन स्थापत्य का अद्वितीय उदाहरण होने के बावजूद, आज इसकी संरचनात्मक स्थिति कई गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है। समय के साथ–साथ मौसमीय प्रभाव, विशेषकर बाड़मेर के चरम तापमान और शुष्क जलवायु, मंदिरों की दीवारों, स्तंभों और मूर्तिकला सज्जाओं पर व्यापक क्षरण और टूट–फूट का कारण बने हैं। शिव मंदिर और विष्णु मंदिर के तलचंद और उदारवचंद हिस्सों में दीवारों में दरारें, नक्काशी और मूर्तिकला पर नमी और हवा के कारण हुए नुकसान स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। मंदिरों की संरचना में प्रयुक्त इंटरलॉकिंग ब्लॉक्स और जटिल मूर्तिकला, हालांकि स्थापत्य स्थायित्व में सहायक हैं, फिर भी लंबे समय तक संरक्षित रहने के लिए नियमित देखभाल और संरक्षण की आवश्यकता है। इसके अलावा, मंदिरों की मरम्मत में प्रयुक्त परंपरागत और आधुनिक तकनीकों का सही मिश्रण आवश्यक है, जैसे टूटी हुई संरचनाओं को जोड़ने के लिए कैल्सरियस सीमेंट का प्रयोग, मूल संरचना के अनुरूप ब्लॉक्स का पुनः संयोजन और नक्काशी की मूल शैली का संरक्षण। वर्तमान अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि केवल स्थापत्य

संरचना की मजबूती को बनाए रखना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विशेषज्ञों की देखरेख में दीर्घकालिक संरक्षण और पुनर्स्थापना कार्य करना अत्यंत आवश्यक है। इससे न केवल मंदिरों की मूल भव्यता और कलात्मकता सुरक्षित रहेगी, बल्कि बाड़मेर और पश्चिमी भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत भी भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित हो सकेगी, और ये स्थल पर्यटन, शिक्षा और शोध के लिए स्थायी संसाधन बनकर अपनी ऐतिहासिक महत्ता को बनाए रखेंगे।

निष्कर्ष

किराडू मंदिर समूह, बाड़मेर, राजस्थान, मध्यकालीन भारत की स्थापत्य कला और सांस्कृतिक धरोहर का एक अमूल्य उदाहरण है। यह समूह मरु–गुर्जर शैली की भव्यता, जटिल मूर्तिकला और स्थापत्य नवाचार का जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करता है, जो उस समय की धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवनशैली को उजागर करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि समय, मौसम और प्राकृतिक परिस्थितियों के प्रभाव से मंदिरों की संरचना क्षरण और टूट–फूट का सामना कर रही है, जिससे उनके ऐतिहासिक और कलात्मक मूल्य पर खतरा उत्पन्न हुआ है। हालांकि, मंदिरों की मूल संरचना में प्रयुक्त इंटरलॉकिंग ब्लॉक्स और जटिल नक्काशी उनकी मजबूती को बढ़ाती हैं, फिर भी दीर्घकालिक संरक्षण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मरम्मत की आवश्यकता अपरिहार्य है।

निष्कर्षतः, किराडू मंदिर समूह न केवल स्थापत्य और मूर्तिकला के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह बाड़मेर क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत और पर्यटन के लिए भी मूल्यवान है। संरक्षित और पुनर्स्थापित मंदिरों के माध्यम से हम न केवल ऐतिहासिक धरोहर को बचा सकते हैं, बल्कि स्थानीय समुदाय और शोधकर्ताओं के लिए शिक्षा, पर्यटन और सांस्कृतिक आदान–प्रदान का स्थायी स्रोत भी सुनिश्चित कर सकते हैं। इस प्रकार, किराडू मंदिर समूह का संरक्षण और पुनर्स्थापना न केवल कला और स्थापत्य के प्रति सम्मान है, बल्कि यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए हमारी सांस्कृतिक पहचान और ऐतिहासिक ज्ञान को संरक्षित रखने का एक महत्वपूर्ण प्रयास भी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चौधरी, महेन्द्र 2012. किराडू मंदिर समूह की स्थापत्यकला एवं मूर्तिकला. जयपुरः लिटरेरी सर्कल.
2. त्रिवेदी, दुर्गा नंदन 1999 ओसियन के मंदिरों की देव मूर्तियाँ. वाराणसीः कला प्रकाशन.
3. वासिष्ठ, नीलिमा 1989 राजस्थान की मूर्तिकला परंपराएँ (लगभग 800–1000 ई.पू.). जयपुरः पब्लिकेशन स्कीम.
4. हांडा, देवेंद्र 1984 ओसियन – इतिहास, पुरातत्व, कला और वास्तुकला. दिल्लीः सुनीप प्रकाशन.
5. अग्रवाल, आर. सी. 1954 – राजस्थान की मूर्तियों और शिलालेखों में कृष्ण और बलराम. द इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली, 30,4) 339–353।
6. अग्रवाल, आर. सी. 2011 - राजस्थान में कृष्णभक्ति प्रदर्शन. शोधपत्रिका, 5;4), 1–12।
7. बनर्जी, उपल कुमार 2008 - कहानी कहने की सूक्ष्म कला. इंडियन लिटरेचर, 52;4), 147–152.
8. भंडारकर, डी. आर. 1912- ओसिया के मंदिर, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की वार्षिक रिपोर्ट 1908–1909, 100–115. कोलकाताः सुपरिंटेंडेंट, गवर्नमेंट प्रिंटिंग.
9. चांचानी, नीतिन 2014- आसोड़ा से अलमोड़ा तकः केंद्रीय हिमालय में मारू–गुर्जरा वास्तुकला. आर्ट्स एशियाटिक्स, 69, 3–16.

10. ढाकी, एम. ए. 1967– किराडू और मारू–गुर्जरा शैली का मंदिर वास्तुकला. बुलेटिन ऑफ़ द अमेरिकन अकादमी ऑफ़ बेनारस, 1, 35–45.

11. ढाकी, एम. ए. 1975- मारू–गुर्जरा मंदिर वास्तुकला का विकास. पी. चंद्र (संपादक), स्टडीज़ इन इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर, 114–165. न्यू दिल्लीः अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंडियन स्टडीज़.

12. ढाकी, एम. ए. 1998- एनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर – उत्तर भारत, मध्यकालीन प्रारंभ ब. A.D.900-1000, खंड 2, भाग 3. दिल्लीः अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंडियन स्टडीज़ और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

13. घुरये, जी. एस 1968– राजपूत वास्तुकला. मुंबईः पॉपुलर प्रकाशन.

14. Poonia, S., & Rao, A.S. 2018. Climate and Climate Change Scenarios in the Indian Thar Region. Springer Nature Switzerland, Handbook of Climate Change Resilience.

15. Singh, V. S., Pandey, D.N., Gupta, A.K., & Ravindranath, N.H. 2010. Climate Change Impacts, Mitigation and Adaptation : Science for Generating Policy Options in Rajasthan, India. Rajasthan State Pollution Control Board, Jaipur.

❑❑❑